इकाई 9 यूनानी और रोमन परम्पराएँ

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 यूनानी नगर राज्यों का विकास और प्रकृति
9.3 राज्य की यूनानी अवधारणा
9.3.1 राज्य की प्रकृति संबंधित दो विचार धाराएँ
9.3.2 सुखमय ज़िंदगी के लिए राज्य की आवश्यकता
9.4 नागरिकता की यूनानी अवधारणा
9.4.1 नागरिकता संबंधी अरस्तु के विचार
9.5 संविधान की यूनानी अवधारणा
9.5.1 संविधान के अनेक प्रकार
9.5.2 एथेंस का प्रजातंत्र
9.6 क्रांति के कारण
9.7 यूनानी राजनीतिक परम्परा की उपलब्धियाँ और विफलताएँ
9.8 प्राचीन यूनान से प्राचीन रोम तक संक्रमण
9.9 ऐतिहासिक भूमिका
9.9.1 राजतंत्र की स्थापना
9.10 रोम का गणतंत्र
9.10.1 कुलीन (Patricians) और निम्न वर्ग (Plebeians)
9.10.2 जन प्रतिनिधियों का शासन
9.11 रोमन राजनीतिक संस्थाएँ
9.11.1 लोकप्रिय सभा
9.11.2 सीनेट
9.12 कानून संबंधी रोम की अवधारणा
9.12.1 कानून के स्रोत
9.13 सिसरो की देन
9.13.1 मानव स्वभाव और राज्य संबंधी सिसरो के विचार
9.14 चर्च और राज्य
9.14.1 चर्च के विचार
9.14.2 मानव और ईश्वर संबंधी संत ऑग्स्टीन के विचार
9.15 रोम की राजनीतिक परंपराओं की उपलब्धियाँ
9.16 सारांश
9.17 शब्दावली
9.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें
9.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको प्राचीन यूनानी और रोम की सभ्यताओं द्वारा विकसित राजनीतिक परम्पराओं से भली भाँति परिचित करवाया जाएगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- प्राचीन यूनानी और रोम की राजनीतिक परम्पराओं की आवश्यक विशेषताओं को समझ पायेंगे;
- प्राचीन यूनानी और रोम राज्य के सिद्धांतों, संविधान और नागरिकता की व्याख्या कर पायेंगे;
- उनकी उपलब्धियों और विफलताओं का मूल्यांकन कर पायेंगे; और
- समकालीन राजनीतिक विज्ञान के संदर्भ उनकी प्रासंगिकता का आंकलन कर पायेंगे।

9.1 परिचय

इस इकाई में हम प्राचीन यूनानी और रोम राजनीतिक परंपराओं पर चर्चा करेंगे। इन परंपराओं ने पश्चिमी राजनीतिक विचारधाराओं के लिए आधार स्तंभ का काम किया तथा राज्य और नागरिकता से संबंधित अनेक प्रभावशाली विचारों का प्रतिपादन किया।

यूनानी राजनीतिक परंपरा की शुरुआत वीरता काल की समाप्ति और यूनानी नगर-राज्यों की स्थापना के बाद हुई। इसने महान राजनीतिक दार्शनिकों सुकरात, प्लैटो और अरस्तु सरीखी विभूतियों को जन्म दिया और सरकार के विभिन्न रूपों के साथ प्रयोग किया। यूनानी राजनीतिक अनुभव ने छोटे नगर-राज्यों या पोलिस (Polis) का विकास किया। ये नगर-राज्य देखने में छोटे थे, परन्तु वे राजनीतिक दृष्टि से नागरिकों की जागरुक और सक्रिय संस्था थे। यूनानी राजनीतिक परंपराओं का अंत ई.पू. चौथी शताब्दी में मैसडैनियन के आक्रमणों के परिणामस्वरूप हुआ।

जैसा कि हम इस इकाई में पायेंगे कि यूनानी राज्य और राजनीति की विचारधारा यूनानी नगर-राज्यों के अनुभवों से ही ओत-प्रोत थी।

9.2 यूनानी नगर राज्यों का विकास और प्रकृति

यूनानी नगर-राज्य विचित्र यूनानी राजनीतिक और प्रादेशिक अवस्थाओं की देन था, क्योंकि ज़मीन कम थी और उनकी उर्वर शक्ति इतनी नहीं थी जिससे विशाल जनसंख्या का भरण-पोषण हो सके। यूनानी नगर-राज्य बड़ी संख्या में जनजातियों और कबीलों के सम्मिलित होने से विकसित हुए थे। अरस्तू ने इसे 'कई गाँवों के संघ' की संज्ञा दी है। यह सिमटा और सीमित क्षेत्र, शहरी केन्द्र के चारों ओर फैला हुआ, पर्वतों, समुद्र और पड़ोसी नगर-राज्यों की प्रादेशिक सीमाओं से घिरा हुआ था। इसके नागरिक, विदेशी और गुलाम रहते थे। सिर्फ नागरिकों को ही राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। यूनानियों के लिए नगर-राज्य मात्र प्रदेश या मूर्त विचार नहीं था, बल्कि स्वतन्त्र व्यक्ति इसमें रहते थे।

नगर राज्य अनिवार्यत एक घिरा शहर था और राज्य परिवार, शहरी धर्म-संप्रदायों को मंदिरों, ऊँचे दर्जे के दण्डाधिकारियों के दफ़्तर और सभा-स्थलों को स्वयं में समहित करता था। यह अक्सर अपनी अपर्याप्त भूमि पर गुज़र बसर करता था। तुलनात्मक दृष्टि से एथेन्स का पूरा प्रदेश 1000 वर्ग मील और स्पार्टा के 3300 वर्ग मील की अपेक्षा यह एक

छोटा प्रादेशिक इकाई था। अन्य नगर-राज्य मुश्किल से प्रदेश के 400 वर्ग मील से अधिक क्षेत्र में फैले हुए थे। प्राचीन यूनान के एथेन्स और स्पार्टा दो प्रमुख नगर-राज्य थे और वे दो विभिन्न राजनीतिक प्रणाली के ढाँचे माने जाते थे। एथेन्स प्रजातंत्र और स्वतंत्रता और स्पार्टा त्याग और अनुशासन के लिए जाने जाते थे।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) प्राचीन यूनानी समाज में नागरिक.....और गुलाम सम्मिलित थे।

ii) नगर-राज्य का उदय विभिन्न.....और.....के सम्मिलित होने से हुआ।

iii) एथेन्स प्रजातंत्र के लिए तथा स्पार्टा.....के लिए जाने जाते थे।

2) सही (हाँ) अथवा गलत के लिए (नहीं) अंकित करें।

i) विदेशियों को यूनानी नगर-राज्यों में कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे।

ii) स्पार्टा प्रजातंत्र और आज़ादी के लिए जाना जाता था।

iii) नगर-राज्यों ने राज्य के विभिन्न रूपों के साथ प्रयोग किया।

9.3 राज्य की यूनानी अवधारणा

राज्य की संस्था ने यूनानियों के राजनीतिक जीवन को बहुत हद तक प्रभावित किया। राज्य उनके लिए सिर्फ एक भौगोलिक इकाई नहीं थी, बल्कि व्यक्तियों का समुदाय था। यूनानियों ने सदैव स्वीकारा था कि नगर-राज्य जीवन के उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक साधन था।

9.3.1 राज्य की प्रकृति संबंधित दो विचारधाराएँ

प्राचीन यूनान में राज्य की प्रकृति संबंधित दो विचारधाराएँ थीं। पहली विचारधारा का मानना था कि राज्य एक प्राकृतिक संस्था था। प्लैटो और अरस्तू इस मत के समर्थक थे। दूसरे मत के समर्थकों का मानना था कि राज्य एक प्राकृतिक संस्था नहीं था, बल्कि लोगों के रिवाज़ों और परम्पराओं की उपज थीं।

राज्य एक प्राकृतिक संस्था इसलिए मानी जाता था, क्योंकि यह सामाजिक और ऐतिहासिक विकास, मूल्यों और उद्देश्य के संदर्भ में उच्चतम संघ था। यह परिवार से गाँवों के माध्यम से राज्य तक संघों की विकास की अंतिम अवस्था है। राज्य संपूर्ण था, वहाँ दूसरी संस्थायें उसके अंग थे। राज्य एक संपूर्ण रूप से नैतिक मूल्यों का नेतृत्व करते हुए लोगों को एकजुट रखते थे।

इस प्रकार यह नागरिकों से अविभाज्य था, क्योंकि यह सभी मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता था और अपने आप में पर्याप्त था।

9.3.2 सुखमय ज़िंदगी के लिए राज्य की आवश्यकता

यूनानी मानते थे कि राज्य एक अनिवार्य संस्था था, क्योंकि सिर्फ राज्य के अंतर्गत, हम जीवन के अपने लक्ष्यों की पूर्ति कर सकते थे। प्लैटो के अनुसार मात्र आदर्श राज्य में ही हम खुशहाल और संतुष्ट जीवन यापन कर सकते थे। अरस्तु मानते थे कि परिवार और गाँव का अस्तित्व जीवन की सुरक्षा तथा सहयोग के लिए था, लेकिन राज्य का अस्तित्व सिर्फ जीवन के लिए नहीं था, बल्कि सुखमय ज़िन्दगी के लिए था। राज्य मनुष्य के सर्वोत्तम अच्छाइयों और नैतिक कर्तव्यों का निर्वाहन करता था।

इस प्रकार यूनानियों के लिए राज्य मात्र प्रादेशिक या राजनीतिक इकाई नहीं था बल्कि विशेष उद्देश्यों और लक्ष्यों की एक नैतिक इकाई था। यह मनुष्य को अच्छी ज़िन्दगी जीने के लिए योग्य बनाता था।

9.4 नागरिकता की यूनानी अवधारणा

जैसा कि हम जान चुके हैं, राज्य की यूनानी अवधारणा नगर-राज्य तक और नगर-राज्य में ही सीमित है। नागरिकता का अधिकार सिर्फ स्वतंत्र व्यक्तियों को प्राप्त था। दूसरे अन्य दो वर्गों– विदेशियों और गुलामों– को नागरिकता का अधिकार प्राप्त नहीं था। प्लैटो और अरस्तू ने नागरिकों को प्रमुख स्थान दिया था क्योंकि उन्होंने उनके साथ ही राज्य को दर्शाया था। जन्मजात नागरिकों को (माता-पिता के आधार पर) और 18 वर्ष की उम्र वालों को अधिकार प्रदान किया गया था।

9.4.1 नागरिकता संबंधी अरस्तु के विचार

अरस्तू के अनुसार नागरिकता शब्द का अर्थ प्रत्येक राज्य के संविधान के अनुसार अलग-अलग होता है। प्रत्येक राज्य के लोगों की विभिन्न कोटि और उप-कोटि थी। कुलीन तंत्र में शक्तियों का विभाजन असमान रूप से किया जाता था। लेकिन सामान्यतया, नागरिक को स्वतंत्र और समान होना चाहिए। उन्हें न्याय और सत्ता मिलना चाहिए। अरस्तू के अनुसार, नागरिकों की अच्छाइयों को स्वतंत्र व्यक्तियों के सरकार में प्रयोग किया गया था। उन्होंने स्वीकार किया कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी था, अतः उसकी प्राकृतिक इच्छा समाज के जीवन की थी। यहाँ तक कि उसे दूसरे की मदद लेने की ज़रूरत नहीं थी। नागरिकों को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे और वे राज्य के राजनीतिक मामलों में सक्रियता से भाग लेते थे। उनसे अधिकारों के प्रति सजग होने तथा राज्य के विभिन्न संस्थाओं की सारी गतिविधियों में भाग लेने की अपेक्षा की जाती थी।

9.5 संविधान की यूनानी अवधारणा

संविधान किसी भी देश का बुनियादी कानून होता है और यूनान ने विश्व में सर्वप्रथम इसे विकसित किया था। यूनानियों ने संविधान के विभिन्न रूपों के साथ प्रयोग किया था। अरस्तू का कहना था कि संविधान का उद्देश्य इच्छित भाव से मनुष्य के जीवन को ढालना था। कोई भी संविधान अपने ढंग से नागरिकों पर प्रभाव डालता है। परिणामस्वरूप, नागरिकों की व्यक्तिगत और सामूहिक विशेषतायें संविधान में कार्य करती हैं। इस प्रकार संविधान का जो निमार्ण करता था, उन व्यक्तियों का संपूर्ण रूप होता था।

9.5.1 संविधान के अनेक प्रकार

प्राचीन यूनान में अनेक प्रकार के संविधान देखने को मिले। अरस्तू ने अपनी पुस्तक *पॉलिटिक्स* 158 संविधानों का अध्ययन करने के बाद लिखीं। उनके पहले प्लैटो ने

'साईकिल ऑफ चेंज' (Cycle of Change) की अपनी अवधारणा के आधार पर संविधानों के पाँच रूपों पर चर्चा की थी। उनके अनुसार, आदर्श राज्य, टिमोक्रेसी, कुलीनतंत्र, प्रजातंत्र और निरंकुशतंत्र थे जिनके बारे में अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' (Republic) में उन्होंने चर्चा की थी। प्लैटो सर्वप्रथम अपने आदर्श से अलग-थलग पड़ गए। दूसरी ओर, अरस्तू ने सर्वप्रथम वास्तविक राज्यों का परीक्षण किया और बाद में सावधानी पूर्वक विश्लेषण के आधार पर आदर्श राज्य की स्थापना की। उन्होंने माना कि राजतंत्र, कुलीनतंत्र तथा राजनीति राज्य के तीन प्रकार हैं, जो सामान्य अच्छाई को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। उन्होने स्वीकार किया कि निरंकुशतंत्र, कुलीतनंत्र और प्रजातंत्र सरकार के तीनों विकृत रूप हैं।

यह वर्गीकरण न्याय की अवधारणा पर आधारित था। जब संविधान की व्याख्या पदों की व्यवस्था के रूप में की जाती थी, दो प्रकार के संविधानों के बीच अंतर, जिस प्रकार पदों को स्थापित किया जाता था, उसी सिद्धांत के आधार पर उनकी व्याख्या की जा सकती थी। इस प्रकार प्रजातंत्र के पद स्वतंत्र जन्म और कुलीनतंत्र के धन के आधार पर प्रदान किये जाते थे। अरस्तू का यह मत था कि राजतंत्र साधारण संविधान का सबसे अच्छा रूप था और निरंकुश तंत्र विकृत संविधान का सबसे गलत रूप था।

यूनानियों ने आदर्श राज्य की अवधारणा को विकसित किया और इस आदर्श राज्य के आलोक में वे सभी विद्यमान राज्यों को व्यवस्थित करना चाहते थे। आदर्श राज्य का उद्देश्य सामान्य अच्छाई थी और यह नागरिकों को उनकी प्रवृत्ति और सार्मथ्य के आधार पर जीवन जीने के योग्य बनाता था।

9.5.2 एथेंस का प्रजातंत्र

एथेन्स अपनी प्रजातांत्रिक सरकार के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है। एथेन्स के प्रजातंत्र को विकसित होने में बहुत समय लगा था और यह पेरिकल्स (Pericles) के काल में अपने गौरव की चरम सीमा पर पहुँचा। इस अवधि में, एथेन्स शहर की आबादी तीन लाख थी और इसकी आधी आबादी नगर में रहती थी और आधी देहात में। यह 100 डेम्स (Demes) में बंटी हुई थी, जो सामुदायिक शक्ति के केन्द्र बिन्दु थे।

प्राचीन एथेन्स में, नागरिकों की सामान्य सभा, नागरिकों की उम्र 20 वर्ष से ऊपर थी, सभी प्रमुख निर्णय लेती थी। यह साल के दस बार नियमित रूप से मिलती थी और परिषद् के बुलावे पर अतिरिक्त साधारण सत्रों का आयोजन होता था। सभा के साथ-साथ 500 की परिषद् और दण्डाधिकारियों का न्यायालय भी सार्वजनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। इन संस्थाओं के सदस्यों का चुनाव मतों द्वारा नहीं होता था, बल्कि संख्याओं के आधार पर होता था। उनका चुनाव एक वर्ष के लिए होता था। यूनानी सोचते थे कि संख्याओं के इस तरीके से पदों पर बहाली शासन का अनोखा प्रजातांत्रिक रूप था क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति को समानता प्रदान करता था। जनरलों का चुनाव सभा द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होता था। वे कार्यपालिका का निर्माण करते थे और राज्यों के कार्यों को संपादित करते थे। उनका चुनाव दोबारा हो सकता था। जनरलों की परिषद और दण्डाधिकारियों के न्यायालय लोकप्रिय चरित्र को दर्शाते हैं। पेरिकल्स ने घोषणा की थी कि एथेन्स का प्रजातंत्र स्वतन्त्रता के लिए था और लोग सरकार के सभी निर्णयों में भाग लेते थे।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

   i) अरस्तू का मानना था कि राज्य एक ..... संस्था था।

   ii) राज्य का अस्तित्व जीवन के लिए नहीं था, बल्कि ..... जीवन के लिए।

   iii) प्राचीन यूनान में मात्र ..... राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे।

   iv) राजतंत्र ..... और राजनीति सरकार के तीन रूप थे।

2) सही (हाँ) अथवा गलत के लिए (नहीं) अंकित करें।

   i) अरस्तू के अनुसार राज्य सामाजिक समझौते की देन थी।

   ii) कुलीनतंत्र में गरीब लोगों का आधिपत्य होता है।

   iii) नागरिक वह होता है, जिसके सत्ता पास हो और जो निर्णय ले सकता है।

9.6 क्रांति के कारण

यूनानी विचारकों ने राज्य क्रांति के कारणों की व्याख्या की। प्लैटो इस मत के समर्थक थे कि राज्य के संविधान में परिवर्तन इसलिए हुआ, क्योंकि जिन्होंने इसका निर्माण किया, उन लोगों की प्रवृत्ति और स्वभाव में परिवर्तन हुआ। समाज में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संविधान में परिवर्तनों के रूप में देखने को मिला।

अरस्तू ने क्रांतियों के कारण की भली भाँति व्याख्या की। उन्होंने सामान्य के साथ-साथ विशेष कारणों का भी परीक्षण किया, जो विशेष संविधान से संबंधित थे। उनके अनुसार क्रांति का सबसे सामान्य कारण समानता की अवधारणा के प्रति उत्साह था, जो न्याय के आदर्श में शामिल थी। यदि किसी समूह को ऐसा लगा कि जिस आधिकार के वे हकदार हैं, उन संविधानिक अधिकारों का प्रयोग वे नहीं करते, तो न्याय की अपनी अवधारणा के आधार पर, वे विरोध कर सकते थे और व्याख्या को परिवर्तित करने की कोशिश कर सकते थे। उन्होंने विभिन्न राज्यों में क्रांति की पुनरावृत्ति को रोकने के तरीकों और साधनों पर विचार किया।

9.7 यूनानी राजनीतिक परम्परा की उपलब्धियाँ और विफलताएँ

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यूनानी राजनीतिक विचारधाराएँ और संस्थायें मानव इतिहास की सबसे महान उपलब्धियों में से एक हैं। यूनानियों ने सर्वप्रथम राजनीति को एक विज्ञान माना तथा नैतिकता और दर्शन से इसे अलग किया। यूनानियों ने संविधान की अवधारणा को विकसित किया और राज्य की राजनीतिक जीवन में महत्ता पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने सरकार के प्रथम प्रजातांत्रिक रूप को विकसित किया, जिसमें नागरिकों की पूर्ण रूप से भागीदारी थी। राजनीति की यूनानी अवधारणा आवश्यक रूप से नैतिक थी, तथापि उन्होंने एक आदर्श राज्य की अवधारणा को विकसित किया, जिसमें मनुष्य अच्छी ज़िन्दगी बसर कर सकता था, वह ज़िन्दगी जो मनुष्य को सबसे अच्छा बना सकती थी।

लेकिन इन सफलताओं के साथ, कुछ विफलताएँ भी मिली। यूनानी अपनी आबादी की आधे से अधिक जनसंख्या को नागरिकता के अधिकारों को देने में असमर्थ रहे। उन्होंने सामाजिक और आर्थिक विकास के क्रम को नहीं अनुभव किया, शासन की एक इकाई के रूप में नगर-राज्यों ने आन्तरिक गड़बड़ियों को रोकने के लिए संघों के निमार्ण की नीति

का सहारा लिया, लेकिन वे स्थित या स्थायी राज्यों को स्थापित करने में असफल रहे। परम्परागत यूनानी विचारकों ने स्पष्ट रूप से राज्य और समाज के बीच अंतर किया, तथापि वे व्यक्तियों के हित और राज्य के हित के बीच पूरी तरह से अंतर करने में असफल रहे।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

i) एथेन्स की प्रजातंत्र ..... के काल की अवधि में अपने गौरव को प्राप्त किया।

ii) एथेन्स में चुनाव ..... के आधार पर ..... पर होता था।

iii) ..... था, जिन्होंने क्रांति के कारणों की चर्चा की।

iv) यूनानियों ने ..... को एक विज्ञान की तरह सर्वप्रथम विकसित किया।

2) सही (हाँ) अथवा गलत के लिए (नहीं) अंकित करें।

i) एथेन्स की प्रजातंत्र में सामान्य सभा सर्वोच्च अधिकारियों का चुनाव करता था।

ii) क्रांतियाँ सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन की वजह से हुई।

iii) यूनानियों ने सर्वप्रथम सरकार की संवैधानिक रूप को विकसित किया।

3) यूनानी राजनीतिक परम्परा की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ क्या थीं? पाँच पंक्ति में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.8 प्राचीन यूनान से प्राचीन रोम तक संक्रमण

मैसिडैनियनों (Macedonians) के अपने साम्राज्य को यूरोप तथा एशिया में स्थापित करते ही ईसा पूर्व शताब्दी में प्राचीन यूनानी नगर-राज्यों ने अपना महत्त्व खो दिया। यूनानी परम्परा के कुछ तत्त्वों को ऐलेक्ज़ेंडर और उनके उत्तराधिकारियों ने अपने शासन में शामिल किया। रोमन गणतंत्र इस काल में उभरा और एक हज़ार वर्षों तक संसार के इतिहास पर छाया रहा। रोम की सबसे प्रमुख देन विश्वव्यापी राज्य के लिए विश्वव्यापी समुदाय के सिद्धांत का प्रवर्तन था। परिणामस्वरूप, रोमन राज्य की प्रकृति मूलभूत रूप से यूनानी नगर-राज्यों से अलग था। रोम वासियों ने कानून और राज्य की अवधारणा को विकसित किया, जिसका लक्ष्य पूरी जानी-पहचानी दुनिया के समाज के विभिन्न वर्गों के बीच पहुँचाना था।

रोमन राजनीतिक इतिहास को दो भागों में बाँटा जा सकता है : (1) गणतांत्रिक रोम और (2) साम्राज्यवादी रोम। अगले पृष्ठ में हम रोमन राजनीतिक परम्परा के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे।

9.9 ऐतिहासिक भूमिका

रोम के गणतंत्र का विकास ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में हुआ और इसके अंतर्गत लोकप्रिय सभाओं और सीनेट की मज़बूत संस्थाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस अवधि के दौरान, रोमन समाज के अंतर्गत (1) पैट्रिशियन (Patricians) जो उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे, (2) प्लेबियन (Plebians) जो सामान्य नागरिक थे, और (3) गुलाम, आते थे। पैट्रिशियन और प्लेबियन को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे, लेकिन अधिपत्य का पैट्रिशियन था। इस प्रकार आरंभिक रोमन इतिहास में इन दो वर्गों के बीच लगातार संघर्ष चल रहा था, क्योंकि प्लेबियन को जिस अधिकार से वंचित किया गया था, उसे वे प्राप्त करना चाहते थे। बड़े पैमाने पर प्लेबियन इन अधिकारों को प्रप्त करने में सफल हुए, लेकिन गुलामों को दासता को स्वीकारने के लिए विवश होना पड़ा। गणतंत्र का शासन दण्डाधिकारी के द्वारा चलाया जाता था, जिन्हें सीनेट के द्वारा चुना जाता था।

9.9.1 राजतंत्र की स्थापना

रोम के गणतंत्र ने अपनी गणतांत्रिक विशेषता को खो दिया, जब वे गणतांत्रिक संस्थायें साम्राज्य की समस्याओं को समाधान करने की स्थिति में नहीं थीं। वह ऑगस्टूस (Augustus) का काल था जिस वक्त गणतंत्र अंततः बिखर गया और राजतंत्र की स्थापना हुई। साम्राज्यवादी रोम की अवधि के दौरान, चौथी शताब्दी के बाद कौंस्टैन्टाईन (Constantine) ने इसाई धर्म को गले लगाया और जिससे विश्वव्यापी समुदाय की अवधारणा लोकप्रिया हुई। रोम की राजनीतिक परंपरा को सिसरो (Cicero) और सेंट ऑगस्टीन (Saint Augustine) के द्वारा समझा जाना चाहिए। जिन्होंने विश्वव्यापी भाईचारे का इसाईयत सिद्धांत को प्रकृति के नियम के उदासीन सिद्धांत के साथ संजोया।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

i) प्राचीन रोमन राज्य प्रथम ..... राज्य था।

ii) गणतांत्रिक रोम में, दो वर्ग पैट्रिशियन और ..... थे।

iii) प्राचीन रोम में, गणतंत्र का अंत ..... के शासन काल में हुआ।

iv) कौंन्सटैन्टाईन ने ..... धर्म को गले लगाया।

2) सही (हाँ) अथवा गलत के लिए (नहीं) अंकित करें।

i) पैट्रिशियन समाज के नियम वर्ग से ताल्लुक रखते थे।

ii) सम्राट ऑगस्टीन ने इसाई धर्म को गले लगाया।

iii) प्लेबियन ने पैट्रिशियन द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले अधिकारों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।

9.1 रोम का गणतंत्र

रोम की गणतंत्र की उत्पत्ति ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में हुई और उसने विशिष्ट राजनीतिक संस्थाओं को विकसित किया। ये संस्थायें उस काल की देन थीं जिस वक्त लोगों और राज्यों के बीच घनिष्ठ संपर्क थे। लोकप्रिय सभा और सीनेट दो प्रमुख संस्थायें थी और वे कानून के अधिनस्थ थे। प्रत्येक प्रमुख निर्णय सभा में लिये जाते थे और यहाँ तक कि महान जनरलों को भी सीनेट से विचारित जनादेश प्राप्त करना पड़ता था।

9.10.1 कुलीन और निम्न वर्ग

जैसा कि पहले बताया गया है कि रोमन समाज दो वर्गों, कुलीन और निम्न वर्ग में विभक्त था। कुलीन वर्ग आबादी के मात्र 10 प्रतिशत थे, लेकिन वे अधिकारिक शक्तियों का प्रयोग करते क्योंकि उनके पास सामाजिक प्रतिष्ठा, रीति रिवाज़, धार्मिक अधिकार और धार्मिक-संप्रदाय थे। दूसरी तरफ निम्न वर्ग अधिक संख्या में गरीब थे, जिसकी वजह से उन्हें राजनीतिक शक्तियाँ प्राप्त नहीं थीं। प्राचीन रोम में सामाजिक संबंध संरक्षक अनुयायी ढाँचे पर आधारित था। अनुयायी स्वतंत्र व्यक्ति होता था और दूसरे के संरक्षण के लिए कटिबद्ध था और इसके बदले उसे उनसे सुरक्षा प्रदान की जाती थी। अनुयायी अपने संरक्षक को अपने पास उपलब्ध हर प्रकार के साधनों से उन्हें सार्वजनिक जीवन में सहायता पहुँचाता था और संरक्षक उसे आर्थिक तथा वैधानिक समर्थन प्रदान करता था।

9.10.2 जन प्रतिनिधियों का शासन

गणतंत्र का शासन दो चुने हुए प्रतिनिधियों (Consuls) के द्वारा चलाया जाता था। आपातकाल में तानाशाह का चयन किया जा सकता था। सामान्यतया, जनप्रतिनिधि का चुनाव एक साल के लिए होता था। जन-प्रतिनिधियों को सर्वोच्च प्रशासनिक शक्तियाँ प्राप्त थीं। वे सेवा के प्रधान होते थे और उन्हें कानूनों की व्याख्या और प्रयोग करने का अधिकार था। राजनीतिक गतिविधि का केन्द्रबिन्दू विधायिका नहीं थी, बल्कि कार्यपालिका थी। दोनों जन प्रधान एक दूसरे से सलाह-मशविरा लेने के बाद निर्णय लेते थे। उन्हें एक दूसरे पर वीटो का अधिकार था। अतः वे जन-विरोधी निर्णय नहीं ले सकते थे।

9.11 रोमन राजनीतिक संस्थाएँ

9.11.1 लोकप्रिय सभा

लोकप्रिय सभा शायद गणतांत्रिक रोम की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था थी। इसकी पहचान रोम के लोगों से थी। लोकप्रिय सभा का जारी किया गया आदेश रोम के संप्रभु लोगों द्वारा आदेश माना जाता था। प्रस्ताव लोकप्रिय सभा और सीनेट के नाम से पास किया जाता था। सभा कानून बनाती थी, युद्ध और शान्ति का प्रस्ताव पास करती थी और सबसे महत्त्वपूर्ण, जन-प्रतिनिधियों का मनोनयन करती थी। जन-प्रतिनिधियों के नामों का प्रस्ताव सीनेटर अपने पद के आधार पर करते थे। शुरू के काल में लोकप्रिय सभा शक्तिशाली थी, लेकिन धीरे-धीरे सीनेट शक्तिशाली बन गई। ई.पू. प्रथम शताब्दी में, सीनेट ने कानून बनाने की शक्ति प्राप्त की। अंततः सभा सीनेट के द्वारा नियंत्रित होती थी, क्योंकि उनके पास सर्वोच्च प्रतिष्ठा और धन था।

9.11.2 सीनेट

सीनेट रोमन गणतंत्र की शक्तिशाली संस्था थी। प्रारंभ में सीनेट की पूरी सदस्यता तीन सौ थी, लेकिन ऑगस्टस के काल में यह बढ़कर 600 सौ हो गई। सीनेट के सदस्यों का चुनाव कुछ लोगों द्वारा होता था। गणतंत्र के अन्तर्गत सीनेट के प्रभाव और प्रतिष्ठा का, मुख्यतया, कारण इसके सदस्यों को व्यवहारिक रूप से प्रशासनिक और राजनीतिक अनुभव होना था। सीनेट एक शक्तिशाली संस्था थी। इसके पास प्रशासनिक शक्ति नहीं थी, लेकिन यह चुने हुए अधिकारियों को घरेलू और विदेश नीति, वित और धर्म पर सलाह देती थी। इसके पास युद्ध और शान्ति की घोषणा तथा विदेशों से संधि करने का अधिकार था। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के अंत तक इसकी शक्ति बढ़ी। इसे वैधानिकता प्राप्त थी और यहाँ तक महान शासकों (Generals) को भी अपने जनादेश का समर्थन इससे लेना पड़ता था क्योंकि इसे जनता का समर्थन प्राप्त था। सीनेट में असहमति होती थी, फिर संरक्षक अनुयायी का संबंध इसके कार्य कलाप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

रोमन सभा और सीनेट के साथ, दण्डाधिकारियों के न्यायालयों का न्याय के प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

बोध प्रश्न 5

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i) लोकप्रिय सभा और ..... रोम की महत्त्वपूर्ण प्रजातांत्रिक संस्थायें थी।

ii) प्रारंभ के सीनेट की कुल संख्या ..... थी।

iii) सभी कानून ..... और ..... के नाम से घोषित किये जाते थे।

iv) सामान्यतः प्रशासक (Consul) का चुनाव ..... के लिए होता था।

2) सही (हाँ) अथवा गलत के लिए (नहीं) अंकित करें।

i) शुरू से ही, सीनेट रोम की सभा से अधिक शक्तिशाली थी।

ii) शासकों को निर्णय लेने से पहले एक दूसरे से सलाह मशविरा करना पड़ता था।

iii) दण्डाधिकारियों के न्यायालयों की न्यायिक प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

9.12 कानून संबंधी रोम की अवधारणा

इतिहास की रोम की सबसे बड़ी देन कानून की अवधारणा है। जिसका विकास और परिष्करण रोम के न्यायाधीशो के द्वारा किया गया था। कानून की सामान्य संस्था के लिए लैटिन शब्द 'जस' (Jus) है। जो 'लेक्स' की अपेक्षा विस्तृत और बोधशील है। रोमनों के लिए कानून का अर्थ न्यायालयों द्वारा लागू की जाने वाली कानूनों का निकाय था। रोमन काल में कानून को दो भागों, प्राकृतिक कानून और सकारात्मक कानून में विभक्त किया गया। प्राकृतिक कानून का अर्थ हमारे सामान्य मानवीय स्वभाव के द्वारा मानवता पर लागू किये जाने वाला कानून और सकारात्मक कानून का अर्थ, राज्य द्वारा लागू किया जाने वाला कानून था। रोमन प्राकृतिक नियम के महत्त्व को समझते थे और स्वीकार करते थे कि आचरण में नैतिकता, न्याय, तर्कशीलता के कुछ नियम हैं, जो सभी व्यक्तियों पर लागू होते थे। इस वास्तविकता के कारण नहीं कि वे राज्य के सकारात्मक कानून के अंतर्गत आते थे, बल्कि वे अधिकार के अंतर्गत आते थे और उन्हें हमारा सम्मान प्राप्त था।

9.12.1 कानून के स्रोत

रोमन इस विचार का समर्थक थे कि कानून के तीन स्रोत, लोगों के रीति-रिवाज़, विधायिकी घोषणा में और विधायिकी नियमन थे। लोगों के रीति-रिवाज़ समय के अंतराल के बाद विकसित हुए थे और उन्होंने कानून के निमार्ण में बहुत हद तक मदद की। विधायिकी घोषणा का अर्थ रोमन सभा और सीनेट के द्वारा की गई घोषणा से और बाद के वर्षों की औपनिवेशिक घोषणा से था। कानून का तीसरा स्रोत विधायिकी नियकन था, जो न्यायाधीशों के न्यायालय के निर्णय थे। निजी कानून के विशेषज्ञ व्यक्ति की राय उनसे संपर्क के दौरान ली जाती थी। उन्हें भी विधायिकी नियमन में शामिल किया जाता था। ये तीन स्रोत प्राचीन रोम के सकारात्मक कानून के निमार्ण में सहायक थे।

9.13 सिसरो की देन

सिसरो रोमन वकीलों के महात्मय में से एक थे, जो रोमन गणतंत्र को सरकार के एक स्थायी रूप में बरकरार रखना चाहते थे। सिसरो कानून की रोमन अवधारणा को विकसित करने के लिए जाने जाते थे। सिसरो ने प्राकृतिक कानून के उदासीन और राजनीतिक गतिशीलता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया और घोषित किया कि सच्चा कानून प्रकृति के तदनुरूप सही तर्क था और इसका इस्तेमाल सभी व्यक्तियों पर किया जाता था। यह शाश्वत और अपरिवर्तनशील था। उनका मानना था कि कोई विधायन भी कानून का उल्लंघन नहीं कर सकता था और कोई व्यक्ति जो सही था, उसे गलत नहीं बना सकता था। अपने आदेश द्वारा, कानून लोगों को उनके कर्त्तव्य के प्रति आगाह करता था और उन्हें गलत करने से रोकता था। रोम के लिए एक कानून और एथेन्स के लिए अलग कानून नहीं हो सकता था, नहीं कोई कानून आज के लिए और कल के लिए दूसरा हो सकता था।

9.13.1 मानव स्वभाव और राज्य संबंधी सिसरो के विचार

सिसरो ने कानून के सामने सभी व्यक्ति को समान माना था। सभी जाति के व्यक्तियों के पास सही और गलत में अंतर करने के लिए अनुभव और ज्ञान की समान क्षमता थी। उन्होंने प्रतिपादित किया था कि सभी व्यक्ति समान थे और उनके लिए एक ही कानून था, तो वे आपस में सभी नागरिक थे। उनका मत था कि राज्य स्थायी रूप से अस्तित्व में नहीं रह सकता था, जब तक यह इसके नागरिक का एक साथ अधिकार के सामूहिक दायित्व और पहचान के ज्ञान के प्रभाव को नहीं स्वीकारता और प्रदान करता। सिसरो राज्य को 'कामनवेल्थ' के नाम से पुकारते थे, क्योंकि राज्य एक सम्मिलित अंग था और इसकी सदस्यता सभी के लिए सामान्य थी। इसका अस्तित्व सामूहिक सहयोग और सरकार के फायदे को नागरिकों तक पहँचना था। उनका मानना था कि राज्य अपने आप और इसके कानून सदैव भगवान के कानून, नैतिक या प्राकृतिक कानून के अधीन थे।

सिसरो ने वकीलों के लम्बी रोमन परम्परा का नेतृत्व किया, उन्होंने प्राचीन रोम के कानून और न्याय के अवधारणा को परिष्कृत करने की कोशिश की।

9.14 चर्च और राज्य

रोमनों ने प्रथम शताब्दी में संसार में प्रथम विश्वव्यापी राज्य की स्थापना की। रोमन राज्य एक विशाल साम्राज्य था जिसका नियंत्रण यूरोप और एशिया के बड़े क्षेत्रों पर था। इस साम्राज्य को एक सूत्र की ज़रूरत थी, जो विभिन्न जातियों को एक साथ सम्मिलित रख सकें। सार्वमौलिक रोमन समुदाय को एक विश्वव्यापी धर्म की आवश्यकता हुई और चौथी

शताब्दी ई.पू. में सम्राट कैन्स्टैंटाइन ने ईसाई धर्म को अपनाकर इस ज़रूरत को पूरा किया। उस समय एकमात्र चर्च सार्वमौलिक उद्देश्य थे और उसके पास एक योग्य सुसंगत संगठन था, जो विभिन्न संघर्षशील लोगों तथा साम्राज्य के वर्गों को एक सूत्र में बाँध सकता था।

9.14.1 चर्च के विचार

चर्च ने आधारात्मक सत्ता का प्रतिनिधित्व किया और दावा किया कि यह एक राज्य से अलग संस्था थी और राज्य के व्यक्तियों के आध्यात्मिक मुद्दों को संपादित करने का हक स्वतंत्र रूप से प्राप्त था। राज्य से अलग राज्य लौकिक सत्ता का प्रतिनिधित्व करती था और चर्च व राज्य दो अलग सत्ताओं का प्रतिनिधित्व करते थे। इस अवधि में चर्च मानता था कि एक ईसाई के लिए निर्वाचित सत्ता का आदर करना अनिवार्य था लौकिक जगत में, उसे राज्य के आदेशों का पालन करना चाहिए और आध्यात्मिक जगत में चर्च के आदेशों का पालन करना चाहिए। इस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति दो राज्यों का नागरिक था। प्रारम्भिक ईसाई बुद्धिजीवियों ने चर्च की सत्ता की देख-रेख में अधिक अभिरूचि दिखाई थी।

9.14.2 मानव और ईश्वर संबंधी संत ऑगस्टीन के विचार

संत ऑगस्टीन ने अपनी राजनीति संबंधी पुस्तक ई. पाँचवीं शताब्दी में लिखी और दो नगर की अवधारणाओं – ईश्वर के नगर और मानव के नगर – को विकसित किया। उन्होंने माना कि दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा थी, जैसा कि मानव की नगर अंतः प्रेरणा द्वारा प्रभावित किया जाता था और ईश्वर के नगर, स्वर्गिक शान्ति और मुक्ति पर आधारित था। एक मात्र स्वर्गिक नगर में शान्ति संभव थी और एक मात्र आध्यात्मिक राजधानी स्थायी थी। परिणामस्वरूप, मानव-मुक्ति ईश्वर के नगर की प्राप्ति में ही थी।

9.15 रोम की राजनीतिक परंपराओं की उपलब्धियाँ

रोमन परम्परा ने प्राचीन यूनान और ईसाई परम्पराओं के बीच एक पुत्र की भाँति कार्य किया। रोमनवासियों ने कानून के समक्ष समानता की अवधारणा का प्रतिपादन किया और विभिन्न जातियों के लोगों के साथ विभेद नहीं किया। गणतान्त्रिक रोम ने सफलतापूर्वक राजनीतिक संस्थाओं, जैसे लोकप्रिय सभा और सीनेट का संचालन किया। उन्होंने सार्वभौमिक राज्य की अवधारणा को विकसित किया, जिसने साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले विभिन्न समुदायों पर विचार किया। उन्होने यूनानी विशिष्टता का विरोध किया तथा कानून की अवधारणा को विकसित किया, जो सभी को न्याय प्रदान करती थी। वे नैतिकता की अवधारणा, से पूरी तरह जकड़े हुए थे। ईसाई प्रभाव के अंतर्गत रोम वासियों ने चर्च और राज्य के बीच संबंध का सीधा निर्धारण करने की कोशिश की थी।

रोमन सरकार विरोधियों को दबाने के लिए बल प्रयोग करते थे। उन्होंने दासता की परम्परा को अस्वीकार नहीं किया। वे राज्य की अवधारणा तथा राजनीतिक दायित्व के सिद्धांत का पूरी तरह से विकसित करने में असफल रहे। जो लोगों को एक साथ बाँध कर रख सके। रोमन राजनीतिक वर्ग की क्रूरता मशहूर थी। परिणामस्वरूप, रोमन साम्राज्य कभी भी राजनीतिक स्थिरता और राजनीतिक एकता के दौर से नहीं गुजरी।

बोध प्रश्न 6

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   i) ..... और ..... रोम के प्राचीन ..... की दो प्रमुख प्रजातांत्रिक संस्थाएँ थीं।

   ii) रोमनों के अनुसार लोगों की विधायी ..... और ..... व्यवस्था कानून की आधारशिला रखती थी।

2) संविधान की यूनानी अवधारणा की मुख्य विशेषतायें क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) रोमन राजनीतिक संस्थाओं की शक्तियाँ और स्थिति कैसी थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

9.16 सारांश

इस इकाई में हमने विस्तारपूर्वक प्राचीन यूनान तथा रोमन राजनीतिक परंपराओं का अध्ययन किया है। हमने पढ़ा कि यूनानियों ने अति विकसित राज्य और नागरिकता की अवधारणा को विकसित किया था। यूनानियों के लिए राज्य एक प्राकृतिक संस्था थीं, जिसने जीवन और अच्छी ज़िन्दगी के लिए शर्तें विकसित करने की कोशिश की थी। उन्होंने संविधान की अति परिपक्व विचारधारा और क्रांति के कारणों या राज्य के संविधान में परिवर्तन को विकसित किया था। राजनीति की यूनानी विचारधारा नगर-राज्य की अवधारणा तक ही सीमित थी।

रोमन राजनीतिक परंपरा यूनान की अपेक्षा कम भव्य और मौलिक थी, लेकिन रोमन कानून और प्रशासन की अवधारणा को विकसित करने में श्रेष्ठ थे। उन्होंने दुनिया के विभिन्न समुदायों को एक साथ बाँधने के लिए राज्य की अवधारणा को विस्तृत किया। अतः यह एक सार्वभौमिक राज्य विश्वव्यापी समुदाय के लिए था। बाद के वर्षों में रोमनों ने चर्च और राज्य सत्ता को विभाजित किया और दोनों के लिए मानव-दायित्व के विभाजन की वकालत की।

राजनीति विज्ञान और राजनीतिक परंपरायें, प्राचीन यूनानियों तथा रोमनों द्वारा विकसित आज अत्यन्त ज्वलंत हैं, क्योंकि राज्य नागरिकता और संविधान की यूनानी अवधारणायें और कानून, सार्वभौमिक समुदाय की रोमन अवधारणायें राजनीति विज्ञान की उचित आधार को अभी भी बनाती हैं।

9.17 शब्दावली

पोलिस : पोलिस का अर्थ नगर-राज्य होता है। यह एक छोटी राजनीतिक इकाई थी। जिसमें नागरिक सक्रिय अभिरुचि रखते थे। राजनीति (Politics) शब्द पोलिस शब्द से निकला हुआ है।

एगोरा (Agora) : का अर्थ नगर-राज्य का सभा स्थल, नगर में स्वतंत्र पैदा हुए भद्रपुरुष के लिए सुरक्षित। 'एगोरा' या स्वतंत्र वर्ग का मतलब सार्वजनिक मनोरंजन से था और बाज़ार वर्ग जहाँ विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का आदान-प्रदान हो सकता था। यह एथेनियन प्रजातंत्र के लिए आवश्यक था।

डैम (Deme) : व्यवस्था की बुनियादी इकाई जिसमें सभी नागरिकों को स्वयं को नामांकन करवाना था। यूनानी सुधारक क्लीसथीन्स ने पुराने कबीलों को 'डैम' में विभाजित किया। डैम जिपकर उन्होंने नगर में संरचना की, कृत्रिम थे। प्रत्येक नागरिक डैम के नाम से जाना जाता था जिससे वह संबंधित था। अरस्तु के समय 150 डैम थे। डैम के अंतर्गत कबीला और क्षेत्रीय पहचान की संयुक्त मिसाल थी। आधुनिक राज्य में एक डैम में नामांकन मतदान रजिस्टरों में अभिलेख के समान था।

टिमोक्रसी (Timocracy) : यह प्लैटो की पुस्तक 'रिपब्लिक' में वर्णित सरकार का एक रूप था। यह आदर्श राज्य के बाद संविधान का दूसरा सबसे अच्छा रूप था। प्लैटो की मान्यता थी कि टिमोक्रेसी चेतना का तत्त्व तर्क से निर्देशित होगा और शासन उनके हाथ में होगा, जो साहस का सम्मान करते थे।

पेरिकल्स (Pericles) : महानतम एथेनियन राजनीतिज्ञ, जिन्होंने एथेनियन संविधान को बड़े पैमाने पर लोकतंत्रीकरण किया। उन्होंने ई.पू. 446 से लेकर 432 तक एथेन्स पर शासन किया। उन्होने अपने प्रसिद्ध भाषण में, एथेन्स को 'यूनान का विद्यालय' बतलाया। वे महान सेनानायक थे, जिन्होंने एथेनियन साम्राज्य को सुदृढ़ किया।

आत्म संयम सिद्धांत : इस दर्शनशास्त्र विद्यापीठ की स्थापना ई.पू. तीसरी शताब्दी में ज़ैनों ऑफ सिटीअम (Zeno of Citium) के द्वारा की गई थी। यह विचारधारा का हेलेनिस्टीक विद्यापीठ (Hellenistic School) था। इसे स्टोआ (Stoa) के क्रीसिपॅस (Chrysippus) द्वारा पुनर्गठित किया गया था। वैरागी का मानना था कि एक दुनिया–राज्य था और दोनों ईश्वर और व्यक्ति इसके नागरिक थे। इसका एक संविधान था जो उचित तर्क पर आधारित था, व्यक्तियों को सिखाता था कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं। उचित तर्क प्रकृति का कानून था, जो पैमाना प्रस्तुत करता था कि क्या उचित और ठीक था।

विश्वव्यापी समुदाय : नगर-राज्य के पतन के बाद, जो स्वन्शासी था, एक नया समाज जिसमें मनुष्य की पहचान एक व्यक्ति की तरह थी। ऐसे अन्य

व्यक्तियों के साथ भाई-चारे का संबंध स्थापित करना था। उसका विश्वास दुनिया-राज्य में सभी मानव के विश्वव्यापी भाईचारे में था, जो जाति सामाजिक और राष्ट्रीय विभाजन के बावज़ूद उन्हें एक साथ जोड़ता था। रोमनों ने ही विश्वव्यापी समुदाय की अवधारणा को विकसित किया।

9.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बार्कर ई. *यूनानी राजनीतिक सिद्धांत - प्लैटो और उनके पूर्वज*, ऑक्सफोर्ड 1970।

इरेनवर्ग, *'यूनानी राज्य'*, बैसिल ब्लैकवैल, ऑक्सफोर्ड, 1966।

सैबीन जॉर्ज, 'राजनीतिक सिद्धांत का इतिहास' ऑक्सफोर्ड, 1973।

कैम्ब्रिज का प्राचीन इतिहास, खण्ड-5 संपादित, जे.बी. बरी और अन्य, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, कैम्ब्रिज, 1979।

ग्रांट एम, रोम का इतिहास, वेडिनफील्ड और निकोल्सन, लंदन, 1978।

9.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) विदेशी
   ii) कबीला और वंश
   iii) अनुशासन
   iv) हज़ार वर्ग मील
2) i) सही
   ii) गलत
   iii) सही

बोध प्रश्न 2

1) i) प्राकृतिक
   ii) अच्छा
   iii) नागरिक
   iv) कुलीनतंत्र
2) i) गलत
   ii) गलत
   iii) सही

बोध प्रश्न 3

1) i) पेरिकल्स
   ii) ज़्यादा
   iii) अरस्तु
   iv) राजनीति

2) i) सही

ii) सही

iii) गलत

3) सर्वप्रथम, यूनानियों ने राजनीति के विज्ञान को विकसित किया और नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों की चर्चा की। यूनानियों ने राज्य के सिद्धांत को विकसित किया और माना कि मात्र राज्य की सहायता से हम अच्छी और पूर्ण ज़िन्दगी जी सकते थे। उन्होंने संविधान की प्रकृति और राज्य में परिवर्तनों के कारणों पर प्रकाश डाला।

बोध प्रश्न 4

1) i) विश्वव्यापी

ii) प्लेबियन्स

iii) ऑगस्टस

iv) ईसाई

2) i) गलत

ii) गलत

iii) सही

बोध प्रश्न 5

1) i) सीनेट

ii) तीन सौ

iii) रोम के लोग

iv) एक वर्ष

2) i) गलत

ii) सही

iii) सही

बोध प्रश्न 6

1) i) लोकप्रिय सभा, सीनेट और गणतंत्र।

ii) रीति-रिवाज़, घोषणा, विधायन।

2) संविधान की यूनानी अवधारणा की मुख्य विशेषतायें, यूनानी मानते थे कि राजतंत्र, कुलीनतंत्र और राजनीति सरकार के तीन रूप थे और निरंकुशतंत्र, कुलीनतंत्र और प्रजातंत्र उनके बिखराव थे। संविधान शक्ति का विभाजन और समाज के विभिन्न वर्गों के पदों की व्याख्या करता था। जब सामाजिक शर्तों में परिवर्तन होता था, तो संविधान में भी परिवर्तन देखा जा सकता था।

3) रोम में लोकप्रिय सभा और सीनेट, दो महत्त्वपूर्ण राजनीतिक संस्थायें थी। सभी कानून और आदेश रोमन लोगों के और सीनेट नाम से जारी किये जाते थे। बाद के वर्षों में सीनेट सदस्यों (Two Consuls) का मनोनयन करती थी और युद्ध और शान्ति का निर्णय लेती थी। सीनेट एक साल में दो सदस्यों को चुनती थी, वे कार्यकारी सत्ता का निमार्ण करते थे और राज्य के मामलों की व्याख्या करते थे।